International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 10, October- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अध्यापक की योग्यता का प्राथ मक स्व मूल्यांकन

डॉ. अतुल उनागर, आ सस्टन्ट प्रोफेसर.

संस्कृत वभाग, गुजरात युनिव र्सटी, अहमदाबाद-380009

प्राथ मक परीक्षणः-

मृदु हृदय के कोमल फूल के समान बाल मानस के साथ कार्य करना, ये तो कठिन परिश्रमयुक्त कर्म है। यह एक व्यवसाय नहीं अ पतु धर्म है। अगर हमने खुद एक अध्यापकीय उत्तरदायित्व का स्वीकार कया है तो भारतीय परंपरा में निर्दिष्ट अध्यापक होने के मापदंड को देख-परख लेना चाहिए। यहां तो सर्वत्र प्रतिदिन हम गाते हैं- गुरूः ब्रह्मा गुरूः वष्णु, गुरूः देवो महेश्वर।

गुरू साक्षात परब्रह्मा, तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

अध्यापक माने ब्रह्मा, वष्णु, महेश होना। इस बिंदु को ध्यान में रखते हुए खुद–स्व को इसी संदर्भ में परखना-पड़तालना चाहिए। आचार्य देवो भव।(01) हमारी संस्कृति में आचार्य माने शक्षक को देव के समान माना गया है, क्या हम अधयापक, खुद को उसी पद-स्थान पर है, क कल्पना कर पाते है ? एक समय में ऐसे साधक होते थे जो गुरू के कहे वाक्यों को ब्रह्मवाक्य की मानींद मानकर साधना करते थे, यही उन लोगों की साधना का कारण भी रहता था। इसी लए तो कहा गया है- आज्ञा गुरूणाम ह्य वचारणीया। अर्थात् गुरू की आज्ञा अ वचारणीय होती है। मतलब उसे मानना-स्वीकार कर लेना ही है।

सखने की प्र क्रया तो जीवनपर्यंत चलती रहती है और रहनी ही चाहिए। यावज्जीवमधीते वप्रः। (02) क्या हमारे लए ये सही-उ चत सद्ध हो सकता है ? हमेशा- प्रतिक्षण क्या हम कुछ भी सखने के लए त्तत्पर होते है ?गुरूशुश्रूषया ज्ञानम्। गुरू के चरणों में–संग में रहकर उनकी सेवा करने से ज्ञान प्राप्त होता है। क्या ये वाक्य हम पर लागु हो सकता है ?जिनके पास पात्रता हो उसे गुरू गोपनीय ज्ञान भी देते है। ब्रुयूः स्निग्धस्य शष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत। पात्रतायुक्त शष्य को गुरू गोपनीय ज्ञान देते है।(03)

ब्राह्मणस्य अश्रुतम् मलम्। अर्थात् वेदों का ज्ञान न होना यह तो अध्यापक का ही दोष है, शक्षक दोषी माना जाता है। इस बिंदु को ध्यान में रखते हुए अंतर्आत्मा को साक्षी रखकर स्व-खुद का मूल्यांकन–परख करनी चाहिए। आगे कहा है क-मन्त्रज्येष्ठा द् वजातियः। अर्थात् वेद मंत्रों के ज्ञान के कारण ही आचार्य(शक्षक) श्रेष्ठ है। कहा गया है क ऐसे गुरूओं के चरणों में, तीर्थानाम् गुरवस्तीर्थम्। अर्थात् गुरू ही समग्र तीर्थों के भी तीर्थ है।(04) वदुरनीति में कहा गया है क–गुरूशश्रुषया ज्ञानम्। गुरू की सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है।(05)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 10, October- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

आज जब ट्युशन शक्षकों की अ भवृ द्ध हो रही है और शक्षा का व्यपारीकरण हो रहा है तब एक कथन को आत्मसात करना निहायत आवश्यक हो गया है -- यस्यागनः केवलजी वकायै, तं ज्ञानपण्यंव णजं वदन्ति। जो ज्ञान सर्फ आजी वका के लए है उसे ज्ञान बिक्री करनेवाला व्यापारी ही कहा जाय।(06) ये हमारे स्व मूल्यांकन हेतु है।

तद् व द्ध प्र णपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्त्वद र्शनः।।

सही ज्ञान बड़ी कठिनाई के पश्चात् ही प्राप्त होता है। तब जाकर ही वह ऊपयोगी सद्ध होता है, जो उस अनुभव के आचरण से पूर्णतः गुज़रा हो।(07) हमें यहां ये सोचने की आवश्यकता है क हमारा ज्ञान र । मारकर तो नहीं प्राप्त कया ? आचरित भी तो हम करते है न ? शष्य के साथ पुत्रवत् भाव से जीना चाहिए।(08) इस प्रकार का आत्ममंथन भी हमें कर लेना चाहिए।

जो व्यक्ति अध्ययन कर रहा है, ज्ञान प्राप्त कर रहा है, वद्वान हो रहा है और उसे आचरित कर रहा है, वही संस्कारित व्यक्ति श्रेष्ठ एवं कुलवान है।(09) हमें यह बात को बहुत अच्छे से समझ लेना चाहिए क हम अन्यों के लए एक आदर्श के रुप में स्था पत हो रहे है। हम जो आचरण कर रहे हैं उसे देखकर कई छात्र--लोग आचरण करनेवाले हैं। हम जिस राह पर चल रहे है उसे देखकर असंख्य लोग जीवन बसर करनेवाले है।(10) अध्यापक श्रेष्ठ वक्ता, व्यावहारिक रुप से कौशलपूर्ण, शैलीबद्ध प्रस्तुति कर्ता, वद्वान आदि अनेक गुणों से सज्ज होना चाहिए।(11) आ खरकार तो स्व प्रज्ञा प्रकाश ही हमें समग्र परिणामलक्षी बनाता है।(12)

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति कम्।
लोचनाभ्यां वहीनस्य दर्पणः कं करिष्यति।।

अर्थात् आत्म मंथन करके खुद ही स्व का मूल्यांकन करना चाहिए, तब ही हमें पता चलेगा क हमें और अ धक कतना वकास करने की ज़रूरत है।

स्वयं स्वीकृत पसंदगी का कार्य:---

दूसरी कश्त में हमें स्व चंतन करना है क क्या अध्यापन का मुझे मला हुआ कार्य पसंद आता है, स्व को आनंद प्रदान करता है ? निम्न सद्धांतों को समझ लें और अंतर्आत्मा की साक्षी से हमें स्व का मूल्यांकन करना चाहिए।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 10, October- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

यह कार्य जो आपको पसंद हो, आनंद प्रदाता हो, महान संतोष की प्राप्ति कराता हो तो आप समझ लीजिए क आप खुद सर्जनात्मकता की ओर अग्रसर हो रहे है। प्रथम प्रश्न ही यह है क आप खुद स्व कार्य से संतुष्ट है, उत्तर होगा, हाँ, तो आपके कार्य से अन्य भी संतुष्ट होंगे ही और आप जीवन में कुछ अनोखा सर्जन कर ही पाएंगे। अगर आपका उत्तर ना हो तो त्वरित गति से आपकी पसंद का कर्य खोज लें। इस वश्व में आपकी पसंद का कार्य आपकी प्रतिक्षा में है। तो खोजे आपके अपने प्रय कार्य को और बिना रात-दिन देखें लग जाईए,(या होम करीने पड़ो, फतेह छे आगळ) मतलब ऐसे छलांग लगाओ क सफलता खुद आपके कदम चूमे। आप अवश्य आपके चयनीत क्षेत्र में एक अनूठा ईतिहास रचेंगे और स द्ध आपके चरण पखारेगी।

व्यक्ति मात्र कार्य के पात्र होती नही है। प्रत्येक व्यक्ति के लए सारे काम नहीं होता अ पतु अमुक लोगों के लए अमुक निश्चित-चौक्कस कार्य होते है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को अलग- अलग रुप में रचा-गढ़ा है, इस अर्थ में प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से भन्न और अनन्यता के धारक होते है। हमें अपने सहपाठी से वलग बनाया है, अतः हमें अपना अलग कार्यक्षेत्र ही खोजना रहा। अपेक्षाकृत कोई भी एक-दूसरे से न तो कमतर है–न ही बढ़िया है। केवल इतना ही क सबके रास्ते अलग होते है, बस। दुनिया का कोई भी कार्य न बड़ा होता है न ही छोटा होता है। आप में वह क्षमता है क छोटे से छोटे कार्य को पूर्ण निष्ठा से करके अनेक आदर्शों को स्था पत कर पाते हैं। उसी क्षेत्र में आप ईतिहास भी रच सकते हो। अतः कुछ काम छोटे है और अमुक बड़े हैं के भ्रम में तो रहना ही नहीं।

ईश्वर से हम सबको एक पेकेज मला है। जिसमें गुण, कौशल, सुझ, शक्तियां,सीमाएं आदि का एक समुह भेंट स्वरुप मला है। प्रत्येक व्यक्ति के पास यह सौगाद कमो–बेस मात्रा में है ही। इस सौगाद के अनुरुप हमें हमारे क्षेत्र में आगे बढ़ना है और वकास करना है। इस गुच्छ में कुछ सीमाएं भी होती है। मतलब क हमारे पास सब कुछ करने का सामर्थ्य नहीं होता। इस सत्य को हम जितना जल्द समझ लें तो अ धक अच्छा है।

एकत साधे सब सधे, सब साधे सब जाईः-

आप कसी एक कार्य के मशालधारी बन जाईए। अपना सब कुछ उसे ही सम र्पत कर दीजिए। अहर्निश देखें बिना, काल की परवाह कये बिना अथक परिश्रम कीजिए। ईतिहास भी आप के कार्य को नजर अंदाज़ नहीं ही कर पाएगा। आप जो सर्जतात्मक कार्य कर रहे हो वह ईश्वरीय कार्य है। ईश्वर ने आपको उनके शुभ कार्य हेतु ही नि मत्त बनाया है। अतः अपने आप को आप धन्य सम झए क ईश्वर ने बहुत अच्छा मौका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 10, October- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

आपको दिया है। शुभकार्य, कल्याणकारी कार्य, सेवाकीय कार्य हरेक की तकदीर में नहीं होते। हमें इसका भी पता होना चाहिए। इस प्रकार देखें तो आप ईश्वर के सबसे अ धक प्रय है।

यहाँ हमें एक महत्वपूर्ण सद्धांत समझ लेने की जरूरत है क आप उसी क्षेत्र में ईतिहास रच पाओगे जिस क्षेत्र में आपके हृदय में कुछ कर दिखाने की अश मत आग प्रज्व लत हो। जहां-जहां पीड़ा, वहां-वहां वकास। सबसे अ धक पीड़ा है जहां, सर्वोत्कृष्ट वकास के मौके–अवसर है वहां। इस वश्व में सबसे अ धक कौन-सी बात पी ड़त करती है? वश्व नि र्मत जो परिस्थितियां, नियम, कुप्रथाएं, नीतियां, आचरण आदि में से कौन-सी बात आपको अ धक उद्वे लत करती है? तो समझ लीजिए क वही आपके वकास का क्षेत्र है। जितनी आ धक पीड़ा उतना ही अच्छा परिणाम। उदा.दीनता, नैतिकता, भ्रष्टाचार, शोषण, पर्यावरण, चरित्रनिर्माण आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य करना है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए क सद्धांत के अनुसार आपको जो अ धक दुःखी करें वही वकसीत भी करें। आप के दिल में अमुक निश्चित क्षेत्र के लए ही पीड़ा होगी तो अवश्य आप ईतिहास निर्माता बन पाओगे।

आपके इस जन्म के परिणामों को साबित करने हेतु, जीवन के अंतिम क्षण तक, जिस कार्य को आप सम र्पत हो रहे हो, उसकार्य की अंतिम फलश्रुति को कल्पना में साक्षात् अवश्य कीजिए। आपकी उस कल्पना को हमेशा दृष्टि समक्ष रखते हुए जीवन का आनंद भो गए। सफलता का राजमार्ग यही है, बस। यदि आपका मन-पसंद कार्य शक्षा ही हो तो देर कस बात की। उलांचे भरते च लए, मं झल खुद ब खुद दौड़ती हुई आएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(01) आचार्य देवो भव ।
तैत्तिरीयोपनिषद शक्षावल्ली अनुवाक-11
(02) यावज्जीवमधीते वप्रः ।
(का लदासस्य कुमारसंभवम् महाकाव्यम्)

(03) श्रृणुष्वावहितो राजन् अ प गुह्यं वदा म ते ।
ब्रूयुः स्निग्धस्य शष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत ॥
श्रीमद्भागवतपुराण - 10/13/03
(04) तीर्थानां गुरवस्तीर्थम् ।
महाभारत अनुशासनपर्व 162,48

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 10, October- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

(05) गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्तिं योगेन वन्दति ॥
वदुरनीति 04/52

(06) यस्यागनः केवलजी वकायै
तं ज्ञानपण्यं व णजं वदन्ति ।
माल वकाग्नि मत्रम् - 01/07

(07) तद् व द्ध प्र णपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वद र्शनः।।
श्रीमद्भगवद्गीता 04.34

(08) पुत्र मवैनम भन काक्षन् ।
आ. घ. सू. 01/02/08 महावग्ग 01.32

(09) जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द् वज उच्यते ॥
स्कन्दपुराण

(10) यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।
श्रीमद्भगवद्गीता 03.21

(11) प्रवृत्तवाक् व चत्रकथ ऊहवान् प्रतिभानवान् ।
आशु ग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते ॥
म. भा. 05/33/33

(12) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति कम् ।
लोचनाभ्यां वहीनस्य दर्पणः कं करिष्यति।।
सु. र. भा. पृ. 41/07